P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

समाज विज्ञान शोध में साक्षात्कार प्रविधि की भूमिका

विकास कुमार शर्मा
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान

सारांश

किसी भी प्रकार के शोध के लिए विषय चयन के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सामग्री संकलन का होता है। शोध सामग्री संकलन के लिए विभिन्न उपयोगी विधियों में साक्षात्कार एक महत्त्वपूर्ण प्रविधि है। साक्षात्कार व्यक्ति अध्ययन एवं समूह अध्ययन का एक प्रभावकारी शाब्दिक या मौन वार्तालाप है, जो किसी विशेष उद्देश्य से किसी सुनियोजित क्षेत्र पर केन्द्रित होता है। साक्षात्कार में दो पक्षों के आमने–सामने वार्तालाप में शब्दों का महत्त्व तो होता ही है, साथ ही मौन एवं भाव–भंगिमा का भी महत्त्व होता है। सामाजिक शोध में कुछ विषय या व्यवहार के अनेक पक्ष ऐसे होते हैं, जिनकी सही जानकारी सम्बन्धित व्यक्ति से पूछे बिना नहीं हो सकती है। व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण, विश्वास, अनुभव, प्रेरणा एवं गुजरे हुए जीवन आदि ऐसे पक्ष हैं, जिनका विवरण स्वयं व्यक्ति ही अधिक विश्वसनीय दे सकता है। किसी भी प्रकार के साक्षात्कार के लिए यह आवश्यक है कि साक्षात्कारकर्ता उसकी पहले से तैयारी करे। इसके लिए उसे कई सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पहलुओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। साक्षात्कारकर्ता को यह सोचना चाहिए कि वह किसलिए, किसका और किस प्रकार का साक्षात्कार लेने जा रहा है तथा किस प्रकार साक्षात्कार लेना है। साक्षात्कारकर्ता के पास शोध के लिए निश्चित उद्देश्य, निर्धारित प्रश्न एवं उनका स्पष्ट प्रारूप होना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता को अपने साथ आवश्यक उपकरण जैसे कैमरा, वॉइस रिकॉर्डर, नोट बुक, पेन आदि सामग्री लेकर निश्चित समय में निर्धारित स्थान पर पहुंचना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता को उत्तरदाता की सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति, स्वभाव एवं अन्य व्यक्तियों से उसके संबंध पर पहले ही विचार कर लेना चाहिए। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शोध प्रविधि में साक्षात्कार विधि का अपना विशिष्ट महत्त्व है, जिसका यदि सावधानी से व्यवस्थित उपयोग किया जाए तो बहुत ही उपयोगी परिणाम सामने आते हैं।[1]

मुख्य शब्द : साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ता, शोध, केमरा, उपचारात्मक, प्रकल्पनाओं मानकीय, प्रतिमानों, मुक्त सहचार साक्षात्कार, केन्द्रित साक्षात्कार, राज वैज्ञानिकों, प्रतिवेदन, वैज्ञानिकता, अर्द्ध–संरचित समूह साक्षात्कार आदि।

प्रस्तावना

साक्षात्कार एक ऐसी प्रविधि है, जिसका उपयोग संबंधित व्यक्तियों की भावनाओं, मनोवृतियों, प्रवृतियों, उद्वेगों, रुझानों आदि का पता लगाने के लिए किया जाता है। साक्षात्कार में दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत एवं विचारों के आदान–प्रदान को साक्षात्कार कहते हैं। इसमें एक व्यक्ति या कई व्यक्ति किसी एक व्यक्ति से प्रश्न पूछते हैं और वह व्यक्ति इन प्रश्नों का जवाब देता है या इन पर अपनी राय व्यक्त करता है। साक्षात्कारान्तर्गत सम्बद्ध व्यक्ति से आमने–सामने बैठकर वार्तालाप किया जाता है। कुछ विषयों के बारे में बातचीत करने तथा जानकारी लेने के लिए आपस में मिलने को साक्षात्कार कहा जाता है। यंग के अनुसार – ''साक्षात्कार एक ऐसी व्यवस्थित पद्धति है जिसके द्वारा एक व्यक्ति कल्पनात्मक ढंग से दूसरे व्यक्ति के जो सामान्यतया उसकी तुलना में अपेक्षाकृत अधिक अपरिचित है, आन्तरिक जीवन में प्रवेश करता है।''[2]

साक्षात्कार क्षेत्र अध्ययन एवं व्यक्ति अध्ययन की ऐसी प्रविधि है, जिसमें अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को देखा तथा कथनों को लिखा जाता है। यह दो व्यक्तियों के मध्य अन्तर्क्रिया (Interaction) का परिणाम होता है। इस सामाजिक स्थिति में दो व्यक्ति एक–दूसरे के साथ अनुसंधान के संबंध में अनुक्रिया करते हैं। गुड एवं हैट ने इसे मूल रूप से 'एक सामाजिक अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया' माना है। इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा सूचना एकत्रित की जाती है तथा उसे

क्रमबद्ध ढंग से लिखा जाता है। इसमें दो या अधिक व्यक्ति शोध के संदर्भ में परस्पर बातचीत, संवाद या प्रश्नोत्तर करते हैं।[3]

साक्षात्कार के उद्देश्य

साक्षात्कार के अनेक उद्देश्य होते हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित वर्णित हैं :–

1. साक्षात्कार में सामान्य समस्याओं पर बातचीत होती है।
2. इसमें तथ्य एकत्रित करते समय अनेक प्रकल्पनाएँ प्राप्त होती हैं।
3. इसमें प्रत्यक्ष सम्पर्क हो जाने से व्यक्तियों के आंतरिक जगत् के विषय में सूचनाएं एवं सामग्री मिल जाती है।
4. इसमें अवलोकनकर्ता स्वयं व्यक्ति, उसके परिवार और परिवेश का अवलोकन करता है।
5. इसमें वह तथ्यों को सन्दर्भ सहित पा लेता है।
6. व्यक्तियों के विचार, विश्वास, उद्वेग आदि जानने की इससे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ प्रविधि नहीं हो सकती है।[4]

साक्षात्कार के प्रकार

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि एक अच्छे साक्षात्कार की सुगमता एवं सफलता के लिए साक्षात्कार को अनेक आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। अलग–अलग उद्देश्य के अनुसार साक्षात्कार की प्रक्रिया भी अलग–अलग होती है, साक्षात्कार को हम अनेक आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं। जैसे :–

1. टेलीविजन साक्षात्कार
2. दूरभाष साक्षात्कार
3. कार्मिक चयन के लिए साक्षात्कार
4. सूचना प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार
5. लंच साक्षात्कार
6. केश साक्षात्कार
7. तनाव की स्थिति एवं व्यवहार को जानने के लिए साक्षात्कार

वर्तमान में साक्षात्कार केवल सूचना प्राप्ति का ही साधन नहीं है अपितु मापन का भी प्रधान साधन बन गया है। काह्न तथा केंनेल ने साक्षात्कार के अभिप्रेरणात्मक पहलू को विशेष महत्व दिया है, इन्होंने साक्षात्कार की सफलता के लिए निम्न शर्तों को आवश्यक बताया है।[5]

1. पहुंच (Accessibility)
2. संज्ञान (Congnition)
3. अभिप्रेरणा (Motivation)

एक अच्छे साक्षात्कार को सामान्यतया निम्न आधारों पर वर्गीकृत कर सकते हैं। जैसे :–

1. कार्यों के आधार पर
2. औपचारिकता के आधार पर
3. सूचनाओं की संख्या के आधार पर
4. अध्ययन– पद्धति के आधार पर

कार्यों के आधार पर

कार्यों के आधार पर साक्षात्कार तीन प्रकार के होते हैं :

निदानसूचक साक्षात्कार

इसका उद्देश्य किसी गंभीर राजनीतिक घटना, समस्या या संकट के कारणों का पता लगाना होता है। जैसे, साम्प्रदायिक दंगों, जातिय विवादों, नक्शलवाद की समस्या एवं अन्य आन्तरिक विवादों के कारकों की गवेषणा के लिए किये गये साक्षात्कार इसके अन्तर्गत आते हैं।

उपचारात्मक साक्षात्कार

ऐसे साक्षात्कारों में राजनीतिक समस्या, घटना या संकट के कारणों को दूर करने से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर या वार्तालाप किये जाते हैं। जैसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उच्चस्तरीय राजनेताओं की पारस्परिक भेंट–वार्ताएं कुछ इसी प्रकार की होती हैं।

खोज सम्बन्धी साक्षात्कार

इनमें सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार किये जाते हैं।[6]

औपचारिकता का आधार

इन साक्षात्कारों के दो प्रकार होते हैं :

औपचारिक साक्षात्कार

ऐसे साक्षात्कारों को नियन्त्रित, नियोजित या संरचित साक्षात्कार भी कहते हैं। इनमें साक्षात्कारक या साक्षात्कारकर्ता एक अनुसूची में दिये गये प्रश्नों को ही पूछता है। इस अनुसूची में पहले से ही तैयार किये हुए प्रश्न होते हैं। साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कृत से प्राप्त उत्तरों को लिखता जाता है। पहले से ही दिये गये प्रश्न होने के कारण साक्षात्कारक पर कुछ नियंत्रण रहता है। उसे अमान्य प्रश्न पूछने या प्रश्नों की शब्दावली में हेरफेर करने की स्वतन्त्रता नहीं होती। इससे साक्षात्करण–प्रक्रिया मानकीकृत हो जाती है।

संरचित साक्षात्कारों का उद्देश्य वर्तमान सिद्धान्तों तथा प्रकल्पनाओं की जांच अथवा सत्यापन करना होता है। वह नई खोज करने के बजाए उपलब्ध प्रकल्पनाओं का परीक्षण करता है। मानकीकृत कर देने से प्राप्त तथ्यों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है, साथ ही तथ्यों की प्राप्ति में समय, श्रम और धन की बचत के साथ–साथ कार्यकुशलता भी बढ़ जाती है। प्रश्नों के मानकीकृत हो जाने से उनका संकेतीकरण, संगठन तथा सारणीयन करना सरल हो जाता है। आधुनिक समाज के बढ़ते हुए विशालकाय संगठनों के संदर्भ में भी इनका महत्त्व बढ़ता जाता है।[7]

ऐसे साक्षात्कारों में अनेक दुर्बलताएँ भी पायी जाती हैं। जैसे –

1. इसमें साक्षात्कारक अपने विचार–वर्ग पर आधारित प्रश्न पूछता है और उन्हीं सीमाओं में साक्षात्कृत से उत्तर माँगता है। इससे तथ्यों की सत्यता में बाधा आ जाती है।
2. इसमें शोधक का पूर्वाग्रह साफ झलकता है। जैसे प्रश्न पूछे जायेंगे, वैसे ही उत्तर आयेंगे। प्रश्नों की समानताएँ धोखा एवं उलझनें उत्पन्न कर देती हैं।
3. ऐसे साक्षात्कारों में वास्तविकता का अतिसरलीकरण हो जाता है। इससे होता यह है कि साक्षात्कारक, साक्षात्कृत पर अपने विचारों और अर्थों की दुनियां थोप देता है। साक्षात्कृत के सही विचार जानने के

लिए गहन साक्षात्कार लिए जाने चाहिए। बड़े संगठनों के सर्वेक्षण तथा प्रकल्पनाओं की औपचारिक जांच करने के लिए संरचित साक्षात्कार उपयोगी होते हैं।[8]

अनौपचारिक साक्षात्कार

ये अनियंत्रित, स्वतन्त्र या असंरचित साक्षात्कार भी कहलाते हैं। ऐसे साक्षात्कारों में कोई अनुसूची या प्रश्नावली नहीं होती। साक्षात्कारक के पास कुछ मुख्य प्रश्न या कोई विषय होता है। उस पर वह साक्षात्कृत से उत्तर पूछता या सुनता चला जाता है। इनके आधार पर साक्षात्कारक अपने निष्कर्ष निकाल लेता है। ऐसे साक्षात्कार मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के लिए अनुकूल होते हैं। इनके द्वारा संगठनों के मानकीय (Normative) स्वरूप, वर्गों की स्थापना तथा संभावित सामाजिक प्रतिमानों की रचना का अध्ययन किया जा सकता है।[9] असंरचित साक्षात्कारों में केवल प्रश्नों पर ही ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। उसमें यह भी आवश्यक है कि, दोनों– साक्षात्कारक एवं साक्षात्कृत में सौहार्द्र होना चाहिए। सही साक्षात्कारकों का चयन करके उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विकासशील देशों में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रति आस्था जगाने के लिए यह और भी अधिक आवश्यक है।

प्रायः विविध क्षेत्रों में काम करने का अनुभव रखने वाले लोग साक्षात्करण के लिए अधिक अनुकूल होते हैं। अच्छे साक्षात्कर्ता में उसकी प्रस्थिति, समाज में भूमिका तथा वैज्ञानिक पद्धति के प्रति निष्ठा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। विकासशील देशों में शोधक या साक्षात्कर्ता की सामाजिक–प्रशासनिक नीति बहुत महत्त्व रखती है। इन देशों में साक्षात्कृत शोध के प्रति संदेहास्पद दृष्टिकोण रखते हैं। सभी साक्षात्कारों के प्रति अलग–अलग प्रकार से अनुक्रिया करते हैं। गाँवों में स्त्रियां अपने पति तथा ग्रामीण अपने सरपंच मुखिया को प्रश्न का उत्तर देने का अधिकारी मानते हैं। इन कठिनाईयों का अनुमान तो कोई भुक्त–भोगी क्षेत्र शोधक ही लगा सकता है। वस्तुतः संरचित साक्षात्कार तथा उसके अंतर्गत प्रश्न विकसित देशों या विकसित क्षेत्रों के ही अधिक अनुकूल होते हैं।[10]

ये साक्षात्कार काफी हद तक, औपचारिक साक्षात्कारों की सीमाओं एवं कमियों को दूर करते हैं। इन्हें अनौपचारिक या असंरचित कहने का अर्थ यह नहीं है कि इनकी कोई संरचना या ढांचा होता ही नहीं है। प्रत्येक राजशोधक साक्षात्कार करने से पूर्व कोई न कोई लक्ष्य या समस्या अपने मन में रखता है। असंरचित साक्षात्कार अनेक प्रकार के होते हैं तथा प्रत्येक के पीछे विशिष्ट सैद्धान्तिक मान्यताएँ होती है। किन्तु सभी, संरचित साक्षात्कारों की तुलना में, प्रश्न करते समय स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं तथा अनौपचारिकता का वातावरण बनाये रखते हैं। सबसे बढ़कर वे सूचनादाता या साक्षात्कृत की भावनाओं तथा अर्थ जगत को प्रमुखता देते हैं। साक्षात्कार के लिए तथ्य संकलन करने के पश्चात् राजनैतिक विज्ञानी उस सामग्री को अपने विचार–बंध में रखकर विश्लेषण कर सकता है।[11]

असंरचित साक्षात्कारों के प्रकार

असंरचित साक्षात्कार चार प्रकार के पाये जाते हैं।

1. मुक्त सहचार साक्षात्कार [Free Association Interview]
2. केन्द्रित साक्षात्कार [Focused Interview]
3. वैषयिकताकारक साक्षात्कार [Objectifying Interview]
4. समूह साक्षात्कार [Group Interview]

मुक्त सहचार साक्षात्कार

इस प्रविधि का व्यापक प्रयोग फ्रायड ने अवचेतन मन की भूमिका जानने के लिए किया था। अवचेतन मन चेतन तथा अर्द्धचेतन मन एवं व्यवहार को संचालित करता है। इस अवचेतन मन को जानने के लिए साक्षात्कृत या उत्तरदाता से मुक्त सहचार किया जाता है। वास्तव में, यह शोध उपकरण न होकर चिकित्सा संबंधी युक्ति है। इस पद्धति या साक्षात्कार की मान्यता के अनुसार कर्ता का मानसिक जगत् अस्त व्यस्त तथा समझ के बाहर होता है। स्वयं कर्ता नहीं जानता कि वह किनमें और क्या विश्वास करता है। वह अपने अवचेतन मन को देखने में असमर्थ रहता है।[12] वह न तो विवेकपूर्ण तरीके से सोचता है और न कार्य करता है। इस कारण, साक्षात्कर्ता को सूचनादाता का अनुगमन करना पड़ता है। उसे कुछ न कुछ बोलने के लिए खुला छोड़ दिया जाता है। धीरे–धीरे वह अपने अवचेतन, गुप्त तथा अज्ञात मन को खोलता है। इन वक्तव्यों का साक्षात्कर्ता निर्वचन करता है तथा अर्थ निकालता है। लिंडनर ने अपने मरीजों का ऐसे ही इलाज किया था।

अपने आदर्श रूप में यह फ्रायडीय प्रविधि राजविज्ञानियों द्वारा बहुत कम काम में लायी गयी है, लेकिन रोजर्स जैसे व्यक्तियों ने इसका अनुसंधान–कार्यों में उपयोग किया है।

प्रायः सभी शोधकर्ता कुछ न कुछ प्रश्न अवचेतन मन, मनोवृतियों आदि को जानने के लिए अवश्य पूछते हैं। यदि कर्ता 'जगत' को 'विवेकपूर्ण' ढंग से समझने में असमर्थ है, तो मुक्त सहचर पद्धति का उपयोग करना शोधक के लिए अनिवार्य सा बन जाता है। व्यक्तिवृत अध्ययन में इस प्रविधि का और भी अधिक उपयोग है। इसे साक्षात्करण का अप्रत्यक्ष साधन माना जा सकता है। साथ ही, अन्य व्यक्तियों के लिए इसे लागू नहीं किया जाना चाहिए।[13]

केन्द्रित साक्षात्कार [Focused Interview]

केन्द्रित साक्षात्कार रॉबर्ट के.मर्टन तथा उसके सहयोगियों की उपज है। इसको उन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय में सार्वजनिक संचार–साधनों जैसे– रेडियो के प्रभाव को जानने के लिए विकसित किया था। इस प्रकार का साक्षात्कार किए जाने से पूर्व सूचनादाता का पहले से ही किसी निश्चित या विशेष परिस्थिति में रहा होना आवश्यक है। यह परिस्थिति साक्षात्कर्ता की समस्या या शोध–विषय से संबंधित होती है। इस परिस्थिति का समाज विज्ञानी अस्थायी तौर पर पहले से ही अध्ययन कर चुका होता है। ऐसी परिस्थिति का विश्लेषण करके, शोधक, कतिपय निश्चयात्मक तत्वों के बारे में, जिसका सूचनादाता से संबंध रहा हो, प्रकल्पनाएँ विकसित कर लेता है।[14]

अपने विश्लेषण के आधार पर वह साक्षात्कार निर्देशिका तैयार कर लेता है। इसमें जांच के क्षेत्र, प्रकल्पनाओं, सामग्री के चयन करने का आधार आदि का उल्लेख किया होता है। अन्त में, साक्षात्कृत या सूचनादाता के वैयक्तिक अनुभवों को जानने का प्रयास किया जाता है। उसे परिस्थिति को अपने दृष्टिकोण से परिभाषित करने के लिए कहा जाता है, इसमें प्रश्न अनिर्धारित होते हैं। नये आविष्कारों का व्यवस्थाओं के प्रभाव को जिनका सूचनादाताओं ने उपभोग किया है, जानने के लिए इस प्रविधि का उपयोग किया जा सकता है। इससे नयी राजनैतिक संरचनाओं अथवा प्रक्रियाओं के प्रति सम्बद्ध लोगों की निजी प्रक्रियाओं का पता लगाया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि फ्रायडीय मुक्त–सहचर पद्धति से यह साक्षात्कार प्रणाली अधिक श्रेष्ठ है। इसमें साक्षात्कार प्रक्रिया संगठित हो जाती है, साथ ही साक्षात्कृत को भी अपनी प्रतिक्रिया बताने का पूरा अवसर मिल जाता है तथा ऐसे साक्षात्कार को बताने का पूरा अवसर मिल जाता है। ऐसे साक्षात्कार व्यापक, गहन तथा विशिष्ट भी हो सकते हैं, लेकिन इससे मुक्त–सहचारी साक्षात्कारों की तरह अवचेतन मन को नहीं माना जा सकता।[15]

वैषयिकताकारक साक्षात्कारक

ऐसे साक्षात्कार सामाजिक या राजनैतिक संगठनों के अध्यायार्थ उपयोग किये जाते हैं। इसमें साक्षात्कृत या सूचनादाता के निजी चिन्तन की क्षमता का भी उपयोग किया जा सकता है। वैषयिकताकारक साक्षात्कारों में सूचनादाता की बातों के गुप्त अर्थों या अवचेतन मन की प्रेरणाओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है। स्वयं साक्षात्कर्ता सूचनादाता को प्रारम्भ से तथा बीच–बीच में बताता रहता है कि वह किस प्रकार की सूचनाएँ और क्यों चाहता है ? वैज्ञानिक शोध की प्रक्रिया में, सूचनादाता का महत्त्व बताया जाता है। उसे अपनी अवलोकन तथा निवर्चन करने की क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके पीछे छिपे हुए मन को भी समझने का प्रयास किया जाता है, किन्तु सबसे अधिक जोर सूचनादाता के कार्य पर दिया जाता है। उसे कहा जाता है कि वह अपने कार्यों के साथ, समूह के अन्य सहयोगियों के व्यवहार का अवलोकन तथा व्याख्या करके बताये।[16]

नौकरशाही संगठनों, छोटे समुदायों आदि के अध्ययन में प्रत्यक्ष अवलोकन के साथ–साथ ऐसे वैषयिकताकारक साक्षात्कारों का प्रयोग किया जाता है। सूचनादाता शोधक के लिए एक प्रकार का क्षेत्र कार्यकर्ता बन जाता है। वही अन्य लोगों से मिलता–जुलता, बातचीत करता तथा साक्षात्कार लेता है। यद्यपि राज विज्ञानियों ने इस प्रणाली का उपयोग नहीं किया है, किन्तु उनके लिए यह प्रविधि बहुत उपयोगी है। इसमें शोधक, कोलवर्ड के अनुसार, सूचनादाता के साथ मानवीय संबंध स्थापित कर लेता है। वह शोधक का मित्र व सहयोगी बन जाता है। इसमें सूचनादाताओं का शोषण नहीं होता अपितु स्वयं सूचनादाता अपने समूह का सदस्य होता है, इस स्थिति का लाभ उठाकर वैज्ञानिक अनुसंधान के काम को आगे बढ़ाया जा सकता है। वह शोधक का उपकरण मात्र नहीं होता। उसमें वैज्ञानिक शोध को आगे बढ़ाने का गर्व भी होता है। यहां तक कि वह उस शोध के लिए प्रतिबद्ध हो जाता है। स्वयं सूचनादाता के विश्वासों, मनोवृतियों, समस्याओं आदि को शोध से महत्त्वपूर्ण सामग्री माना जाता है। इसमें शोधक भावात्मक विषयों को सामने रखकर, उसकी प्रतिक्रिया, (सूचनादाता के माध्यम से) व्यापक सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर जान लेता है।[17]

सीमायें

इस प्रविधि की अपनी सीमाएँ भी हैं। शोधक सूचनादाता का लगभग 'बन्दी' बन जाता हैं वह शोधक को गलत दिशाओं में ले जा सकता है। अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक भावना का होने पर सूचनादाता राज शोधक को उसकी इच्छानुकूल बातें कहकर शोध को कुप्रभावित कर सकता है। वैषयिकताकारक साक्षात्कार के सूचनादाता की बौद्धिक क्षमता मुख्य निर्णायक तत्व होती है।[18]

समूह साक्षात्कार [Group Interview]

समूह साक्षात्कार में एक समय में एक से अधिक व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया जाता है। शोधक समस्त समूह में बारी–बारी से कुछ प्रश्न करता जाता है, तथा सूचनादाता–सभी या कोई भी व्यक्ति उनका उत्तर देता है। एस.एल.ए. मार्शल ने युद्ध की प्रगति पर पुनर्विचार करने के लिए इसका प्रभावशाली प्रयोग किया था। समाजविज्ञानियों एवं मानवशास्त्रियों ने समय–समय पर असंरचित अप्रत्यक्ष अवलोकन के रूप में इस प्रविधि का प्रयोग किया है। सभी सामाजिक व्यवस्थाओं में मूल्यों, मानकों या बड़ी समस्याओं के प्रति अस्पष्ट विचार होते हैं। सामूहिक विचार–विमर्श द्वारा उनका स्पष्टीकरण किया जा सकता है। इसे कभी–कभी वाद–विवाद प्रणाली भी कहा जाता है। समाज, समुदाय या दल के संगठन तथा उसके लक्ष्यों को स्पष्ट करने के लिए इस प्रविधि को अर्द्ध–संरचित समूह साक्षात्कार के रूप में काम में लाया जा सकता है।[19]

सीमायें

इस प्रविधि में एक खतरा यह है कि प्रभावशाली वक्ता या सूचनादाता अन्य लोगों को प्रभावित कर देते हैं। इन आत्म–नियुक्त वक्ताओं (नेताओं) से बचने का उपाय कर लेने चाहिए। इसमें पक्षपातपूर्ण उत्तर प्राप्त होने का डर भी नहीं रहता।

सूचनादाताओं की संख्या का आधार

साक्षात्कार में दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक है। इस प्रकार, संख्या के आधार पर दो वर्ग बनाये जा सकते हैं –

व्यक्तिगत साक्षात्कार

इसमें एक समय में एक व्यक्ति से साक्षात्कार किया जाता है। इसे 'शोधक–सूचनादाता–अन्तर्किया' का नाम दिया गया है। इसमें अनुसंधानकर्ता किसी दूसरे व्यक्ति से शोध समस्या के संबंध में मिलता है। एक प्रश्न पूछता है, दूसरा उत्तर देता है। कभी–कभी दोनों ही प्रश्नोत्तर करते हैं।

ऐसी पद्धति की सूचनाएँ सत्य एवं विश्वसनीय प्राप्त होती हैं। इसमें प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं। अकेले में साक्षात्कार होने के कारण संवेदनशील प्रश्नों के भी उत्तर मिल जाते हैं, किन्तु यह प्रणाली समय और

धन की दृष्टि से बड़ी खर्चीली है। इसमें पक्षपात आने तथा दोनों व्यक्तियों के मध्य सामाजिक स्थिति के अन्तर द्वारा प्रभावित होने की संभावना रहती है। इसलिए कुशल और अनुभवी व्यक्ति ही इसका ठीक से उपयोग कर पाते हैं। राजनीतिक शोध में इसका प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिए।[20]

समूह साक्षात्कार

समूह साक्षात्कार प्रविधि का विवेचन ऊपर किया जा चुका है।

अध्ययन–पद्धति का आधार

अध्ययन पद्धति के आधार पर साक्षात्कारों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है–

अनिर्देशित साक्षात्कार

इसमें साक्षात्कर्ता साक्षात्कृत के समक्ष कोई समस्या या प्रश्न रखता है। साक्षात्कर्ता या शोधक उसके उत्तर, विवरण या कथन धैर्यपूर्वक सुनता रहता है। इसमें कोई अनुसूची या पूर्व–निर्धारित प्रश्नावली नहीं होती। साक्षात्कर्ता स्वेच्छानुसार मनगढ़न्त ढंग से प्रश्न पूछता चला जाता है।

केन्द्रित साक्षात्कार

इसका विवेचन पूर्व में किया जा चुका है।

पुनरावृत्ति– साक्षात्कार

राजनीतिक परिवर्तन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कई बार नये परिवर्तनों का तुरन्त कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है। इसलिए उन परिवर्तनों के प्रभावों को जानने के लिए बारम्बार साक्षात्कार करने की आवश्यकता पड़ती है। इन साक्षात्कारों का प्रयोग, नये कानूनों, नेतृत्व, व्यवस्था, कार्यविधियों आदि का प्रभाव जानने के लिए किया जा सकता है। औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण, लोकतन्त्रीकरण आदि प्रक्रियाओं को अनेक बार साक्षात्कार करके जाना जा सकता है।[21]

इस प्रविधि की अपनी सीमाएँ भी हैं। यह अत्यधिक समय एवं धन चाहती है। इसके लिए स्थायी शोधक मण्डल, शोध संस्था, तथा निश्चित एवं सीमित सूचनादाता होने चाहिए। विशेष रूप से शोधक उस समस्या के साथ प्रतिबद्ध होने चाहिए।

साक्षात्कार प्रक्रिया

साक्षात्कार प्रक्रिया को पाँच प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है –

(क) साक्षात्कार की तैयारी, (ख) मुख्य प्रक्रिया, (ग) साक्षात्कार का नियन्त्रण, निर्देशन एवं प्रमापीकरण (घ) साक्षात्कार की समाप्ति तथा (ड) प्रतिवेदन। इनको क्रमबद्ध ढंग से समझने की आवश्यकता है।[22]

साक्षात्कार की तैयारी

साक्षात्कार के लिए जाने से पूर्व उसकी तैयारी करना अत्यावश्यक है। शोधकर्ता को अपनी समस्या तथा उसके विभिन्न पहलुओं को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए तथा इससे सम्बन्धित साहित्य का उसे भली–भांति अध्ययन कर लेना चाहिए। उसे एक साक्षात्कार–निर्देशिका तैयार करनी पड़ती है। इसमें समस्या से सम्बद्ध सभी पक्षों का क्रमबद्ध उल्लेख होता है तथा सूचनाएँ एकत्रित करने के निर्देश लिखे रहते हैं। यह प्रश्न नहीं होकर साक्षात्कार संबंधी निर्देश होते हैं। इससे कई लाभ होते हैं, जैसे (i) अध्ययन में एकरूपता (ii) बिना भूले समस्या के सभी पहलुओं का अध्ययन (iii) एक साथ अनेक साक्षात्कर्ताओं द्वारा प्रयोग की संभावना (iv) सूचनादाता से प्रभावित होने से बचने के लिए रक्षा–कवच आदि।[23]

साक्षात्कार–निर्देशिका तैयार करने के बाद शोधकर्ता को सूचनादाताओं या उत्तरदाताओं का चयन करना पड़ता है। इसमें अत्यधिक सावधानी से काम लेना चाहिए, क्योंकि वे तथ्यों के सही स्रोत होते हैं। सूचनादाताओं की प्रकृति, व्यवसाय, काम, समय, अनुभव आदि के बारे में सामान्य ज्ञान होना चाहिए। उनसे मिलने के पूर्व समय एवं स्थान का निर्धारण कर लिया जाना चाहिए, ताकि निराश नहीं होना पड़े। प्रथम बार मिलते समय अपना परिचय–पत्र भी साथ रखना चाहिए।

साक्षात्कार की मुख्य प्रक्रिया

मूल रूप से साक्षात्कार 'एक सामाजिक अन्तर्क्रिया' है। साक्षात्कार की तैयारी हो जाने के पश्चात् पहला कदम लोगों से सम्पर्क स्थापित करना होता है। उसके व्यक्तित्व, व्यवहार और शिष्टाचार का पहला प्रभाव अंतिम प्रभाव सिद्ध होता है। इसके बाद साक्षात्कर्ता अपना उद्देश्य बताता है, तथा सहयोग की प्रार्थना करता है। साक्षात्कर्ता की भूमिका सतर्क, तटस्थ तथा तथ्य प्राप्त करने से संबंधित है। अतः एवं उसे बीच–बीच में रूचि एवं निरन्तरता बनाये रखने के लिए कुछ न कुछ उत्साहवर्द्धक वाक्य भी बोलते रहना चाहिए। शोधक के प्रश्न उचित, समयानुसार तथा संगतिपूर्ण होने चाहिए। सूचनाओं को संक्षेप में लिख लेना चाहिए। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि लिखने के कारण वार्तालाप के प्रवाह में बाधा उत्पन्न नहीं हो।[24]

साक्षात्कार का नियन्त्रण, निर्देशन तथा प्रमाणीकरण

कभी–कभी साक्षात्कृत व्यक्ति भावनाओं में इधर–उधर बहुत ज्यादा बहने लगता है। ऐसी स्थिति में सूचनादाता के अहम को चोट पहुँचाये बिना साक्षात्कार का नियंत्रण एवं निर्देशन करना आवश्यक होता है। शोध में 'प्रमापीकरण' का भावार्थ यह है कि प्राप्त सूचनाओं में कोई विरोधाभास न हो, इसके लिए खण्डन करने वाले प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।[25]

साक्षात्कार की समाप्ति

अन्त में, साक्षात्कार की सामग्री समाप्त होने लगती है। उस समस्या पर सूचनादाता के पास बताने तथा साक्षात्कारक के पास जानने के लिए कुछ शेष नहीं रहता। यदि किसी कारण साक्षात्कार अधूरा रह जाय, तो दुबारा समय एवं स्थान निर्धारित कर लेना चाहिए। अन्यथा औपचारिक शिष्टाचार के बाद कृतज्ञतापूर्वक विदा लेनी चाहिए। शोध के अतिरिक्त अन्य कोई बात या स्वार्थपूर्ति नहीं की जानी चाहिए।

प्रतिवेदन

प्रतिदिन साक्षात्कार कर चुकने के बाद साक्षात्कर्ता प्रतिवेदन लिखता है। प्रतिवेदन लिखने का काम साक्षात्कार के समय लिए गए नोट्स की सहायता से किया जाता है। स्मरण शक्ति के अच्छे होने पर भी साक्षात्कार लिखने का काम प्रतिदिन कर लिया जाना चाहिए। प्रतिवेदन पक्षपात रहित तथा वास्तविक होना चाहिए।[26]

साक्षात्करण पर अन्य प्रभाव

किसी भी समूह या समुदाय में साक्षात्कार करने के लिए जाने से पूर्व उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति से साक्षात्कर्ता का अभिमुखन (Orientation) होना अनिवार्य हैं, यहाँ तक कि उसे वहाँ की राजनीतिक एवं कानूनी व्यवस्था से भी सुपरिचित होना चाहिए। विकासशील (Developing) देशों में साक्षात्कार करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। साक्षात्कार पर साक्षात्कर्ता की सामाजिक प्रस्थिति, उसकी भूमिका तथा उससे शोध कराने वाली संस्थाओं के उद्देश्यों का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी तरह कुछ सूचनादाता साक्षात्कार–प्रविधि के अधिक अनुकूल तथा कुछ अधिक प्रतिकूल होते हैं।[27]

साक्षात्कार प्रविधि का मूल्यांकन

निःसंदेह एक अच्छे साक्षात्कार की सफलता के लिए साक्षात्कर्ता में कतिपय गुणों का होना आवश्यक है। इनमें कुशलता, वाक–पटुता, ईमानदारी, निष्पक्षता, विनय तथा वैज्ञानिक निष्ठा होनी चाहिए। यह एक आदर्श है और बहुत कम साक्षात्कर्ता इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। उनका व्यक्तित्व, भाषा, समस्या आदि प्रभावपूर्ण होने पर ही सूचनादाता कुछ कहने के लिए तैयार होता है। इससे बढ़कर उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि उसे दी गई सूचनाएँ कहाँ तक विश्वसनीय एवं प्रमाणिक हैं ?

राजनीतिक शोध में ऐसा होना स्वभाविक है कि कुछ सूचनाएँ जान–बूझकर गलत या तोड़–मरोड़ कर दी गई हों या स्वयं साक्षात्कर्ता ने पूर्वाग्रह के कारण प्रतिवेदन लिखते समय पक्षपात से काम लिया हो। इसके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण मामलों पर विस्तृत सूचनाएं एकत्रित करनी चाहिए। शोधक अपने अनुभव के आधार पर भी सूचनाओं की तुलना कर सकता है। अन्य प्रविधियों का, जैसे समूह साक्षात्कार का प्रयोग करके भी त्रुटियों को दूर किया जा सकता है।[28]

राजनीतिक शोध में साक्षात्कार का अत्यधिक महत्त्व है। राजनेता तथा अन्य कार्यकर्ता अपने रहस्य इसी प्रकार से बता सकते हैं। इससे सभी प्रकार की सूचनाओं का संकलन किया जा सकता है। साक्षात्कार अमूर्त एवं अदृश्य घटनाओं, ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन करने की उपयोगी प्रविधि है। इससे न केवल दोनों– साक्षात्कर्ता तथा साक्षात्कृत का पारस्परिक सम्मिलन होता है, अपितु अनेक शोध संबंधी जटिल समस्याओं का समाधान हो जाता है। व्यवस्थित साक्षात्कारों को दुहराकर अथवा घटना की वास्तविकता के बारे में पूछकर प्राप्त सूचनाओं का सत्यापन या जाँच भी की जा सकती है।

निष्कर्ष

शोध में वैज्ञानिकता के दृष्टिकोण से साक्षात्कार की सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए। साक्षात्कार में शोध के अपने मूल्य, मान्यताएँ, अवधारणाएँ आदि प्रभाव डालते हैं। एक ओर सूचनादाता अपनी पक्षपातपूर्ण बात कहता है तो दूसरी ओर साक्षात्कर्ता भी वर्णन करते समय अपनी मान्यताओं को प्रवेश दे देता है। साक्षात्कार की अधिकांश सफलता अच्छे सूचनादाता पर निर्भर रहती है। यह प्रविधि समय और धन की दृष्टि से कुछ अधिक खर्चीली भी है। अनेक साक्षात्कर्ता हीन भावना तथा दुर्बल स्मरण–शक्ति के शिकार होते हैं, वे विशुद्ध सामग्री संकलन, सत्य तथा क्रमबद्ध प्रतिवेदन लिखना ही नहीं जानते। इसलिए जहाँ साक्षात्कार एक उपयोगी प्रविधि है, वहाँ उसे सफलतापूर्वक प्रयोग करना एक जटिल समस्या भी है।[29]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *B.F. Skinner, 'A Case History in Scientific Method' American Psychologists, xi, 1976, P-221-223.*
2. *E. Negal, 'The Structure of Science, Problems in the Logic of Scientific Explanation', 1971, P-13.*
3. *Hagdorn & Labobitz, An Introduction to Social Research, 1971, P-21.*
4. *F.N. Kertiger, Foundation of Behavioural Research, 1964, P-13-16.*
5. *P.V. Young, Scientific Social survey and Research, 1975, P-30.*
6. *R.L. Ackoff, The design of Social Research, 1963, P-9.*
7. *W.a. Scot & M.Worthimer, Introduction of Psychological Research, 1964, P-4-8.*
8. *Ralf dahrendoral, Essays in the Theory of Society, 1968, P-6.*
9. *Webster, New Rould Dictionary, 1963, P-1060.*
10. *Theodorson, A Modern dictionary of Sociology, 1969, P-290.*
11. *S.L. Verma, Research Methodology in Political Science, 1988, P-24-27.*
12. *H.W. Smith, Strategies of Social Research, 1975, P-58.*
13. *F.F.Stephen, History of the Usages of Modern Sampling Pracedures, Journal of U.S.A. 1987, P-12-40.*
14. *S.L. Verma, Research Methodology, 1988, P-220-223.*
15. *Jahoda & others, Research Methods in Social Relation, P-255-268.*
16. *J.W. Best, Research in Education, 1979, P-78-80.*
17. *Goode & Hutt, Methods in Social Research, 1981, P-30-40.*
18. *एस.एन.गणेश, अनुसंधान प्रविधि सिद्धान्त और प्रक्रिया, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन, 2009, पृष्ठ सं. 214–218.*
19. *एल.जैन एण्ड के.सी. वशिष्ठ, शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता, आगरा, उपकार प्रकाशन, 2007,पृष्ठ सं. 118–136.*
20. *आर.एन.त्रिवेदी एण्ड डी.पी.शुक्ला, रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2012.*
21. *हरिकृष्ण रावत, सामाजिक शोध की विधियां, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2013.*
22. *कुंवर नारायण, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, भारत, 1999.*
23. *J.W. Garner, Political Science and Government, Indian edition, P.P. 19-20.*
24. *Allan F. Hersh Field, Niels G.Roling, Graham B. Kerr, Gerald Hursh-Cerar, "Problems in interviewing" in Third World Survey, O.P. Cit. P.P. 299-332.*

25. *Stanley L.Payne, The Art of Asking Questions, Princeton, N.J. Princeton, 1951.*
26. *S.L.A. Marshall, Park Chop hill, New York, Morrow, 1956.*
27. *Herbert H. Hayman, Interviewing in Social Research, Chicago, University of Chicago Press, 1954; Myron weiner, Political Interviewing, in Robert E. Ward et. al, Studying Politics Aborad, Boston, Little, Brown, 1964. P.123, Sjoberg and Nett. Op. Cit, P.P. 204-06.*
28. *S.L. Verma, P.P. 200-01*
29. *V.P. Sharma, P.P. 142-158.*